- सम्पूर्ण भाव = अस्तित्व = अनन्त + व्यापक = सह अस्तित्व
- नैसर्गिकभाव = संबंध
- विकास भाव = अस्तित्व मे स्फुरण + जागृति = नियति = अस्तित्व में नित्य वैभव ।
- नियतिभाव = ~~परस्पर~~ क्रम + नियन्त्रण + व्यवस्था = परस्पर पूरकता = विकास = जागृति ।
- क्रमभाव = परस्परता + पूरकता
- नियन्त्रणभाव = नियम = इकाईत्व का प्रकाशन
- इकाईत्वभाव = रूप, गुण, स्वभाव, धर्म
- रूप भाव = ~~संरोध~~ आकार + ~~मान~~ घन + आयतन ।
- गुण भाव = सापेक्ष शक्तियाँ (सापेक्ष)
- स्वभाव भाव = मौलिकता = मूल्य
- धर्म भाव = अस्तित्व + अस्तित्व मे आनन्द = जीवन जागृति
- नियम भाव = इकाई के सभी ओर शून्य का घेरना, ~~ऊर्जामयता~~,
- अस्तित्व मे स्फुरण भाव = ऊर्जामयता + क्रिया = श्रम, गति, परिणाम + विकास = परिणाम का ~~अनुभव~~ अमरत्व + श्रम का विश्राम + गति का गंतव्य ।
- सह अस्तित्व भाव = परस्पर पूरकता = विकसित अविकसित का सहायक + अविकसित विकसित का साधन
- संबंध भाव = परस्परता मे अविभाज्यता
- स्फुरण भाव = प्रत्येक इकाई ऊर्जामयता का क्रिया मे प्रकाशन
- जागृतिभाव = पहँचान + निर्वाह
- व्यवस्था भाव = न्याय सुलभता + विनिमय सुलभता
- न्याय भाव = मूल्यों का पहिचान + निर्वाह व्यवस्था
- विनिमय भाव = श्रम, मूल्य का पहँचान = मूल्यांकन ~~+ परिवर्तन = [illegible]~~ आवर्तन ;
- परस्परपूरकताभाव = विकास के लिए वर्तन + आवर्तन + संक्रमण + प्रवर्तन + अनुवर्तन + परावर्तन + प्रत्यावर्तन ।

वर्तनभाव = पदार्थावस्था में
आवर्तन भाव = पदार्थ चक्र में,
संक्रमण भाव = गठन क्रिया आचरण पूर्णता में
प्रवर्तन भाव = जीवावस्था में
अनुवर्तनभाव = बीज वृक्ष, वंशानुषंगीय + संस्कारानुषंगीय रूप में
परावर्तन भाव = इन्द्रिय सान्निध्यात्मक नियमों को पहचानने + समाज मूल्यों + मानवमूल्यों का निर्वाह करने के रूप में,
प्रत्यावर्तनभाव = जीवन मूल्य + मानवमूल्य + स्थापितमूल्य + शिष्ट मूल्य + संबंध + वस्तुमूल्यों की पहचान + इन्द्रिय-सान्निध्य पूर्वक निर्वाह करने के रूप में है।
इकाईत्व का भाव = शाश्वतीयता + रूप, गुण, स्वभाव + धर्म के अविभाज्य वर्तमानता।
समाज भाव = सह अस्तित्व + समाधान + अभय + समृद्धि के रूप में।
जीवनभाव = समाधान + प्रमाणीकता
जीवन्तता का भाव = पहचानने + निर्वाह करने + संप्रेषित + प्रकाशित करने के रूप में।
वास्तविकता का भाव = जो जैसा है
यथार्थता का भाव = जो जिसका अर्थ है
सत्यता का भाव = सार्वभौमता, सर्वकाल देश में विद्यमानता स्थिति तथा स्थितिशीलता है वह स्थिति सत्य वस्तु स्थिति सत्य वस्तु गत सत्य है।
स्थितिसत्यता का भाव = सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति,
वस्तुस्थितिसत्य का भाव = देश काल दिशा।
वस्तु गत सत्य का भाव = रूप, गुण, स्वभाव धर्म,
आवश्यकता का भाव = निर्वाह
निर्वाह भाव = लक्ष्यमूलक, मूल्य मूलक, रुचि मूलक
उपयोगिता भाव = सरलता
प्रयोजनीयता भाव = विकास
विकास का भाव = अपरिणामता + जागृति, परिवर्तन
परिवर्तन का भाव = संगठन विघटन सप्राण निष्प्राण
संबंध भाव = जीने की कला की अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा।

सम्पर्क भाव = जीने की कला का अभिव्यक्ति, सम्भावना.

जीने की कला का भाव = सम्बन्धों व मूल्यों का पहचान + निर्वाह

अपरिणामता का भाव = अक्षय बल + अक्षय शक्ति

जागृति का भाव = समाधान + प्रमाणिकता

प्रमाणिकता का भाव = यथार्थता वास्तविकता व सत्यता की अभिव्यक्ति + सम्प्रेषणा

समाधान का भाव = मूल्य चरित्र नैतिकता में सर्वथा सामरस्यता

लक्ष्य का भाव = जागृति

यथार्थ = जो जिसका अर्थ है.

वास्तविकता = जो जैसा है,

सत्यता = अस्तित्व विकास और जागृति

संस्कृति पूर्णता के अर्थ में मानव से किया गया कृतियाँ

सभ्यता = पूर्णता के अर्थ में किया गया कार्य-व्यवहार-विन्यास (मूल्य, चरित्र, नैतिकता)

विधि का भाव = विकास मूल्य, सम्बंधों का पहिचान + निर्वाह सूत्र

व्यवस्था का भाव = न्याय + विनिमय

पूर्णता का भाव = क्रियापूर्णता + आचरणपूर्णता

कृतियाँ (कियागया) = कृति का अनुभव बल, विचार शैली, जीने की कला

कृति का भाव = कला की सम्प्रेषणा (रचनात्मकता)

मानव का भाव = मानवीयता (मानत्व)

व्याघ्र का भाव = व्याघ्रत्व

हस्ति का भाव = हस्तित्व

श्वान का भाव = श्वानत्व

अश्व का भाव = अश्वत्व

सुवर्ण का भाव = सुवर्णत्व

लौह का भाव = लौहत्व

ताम्र का भाव = ताम्रत्व

अश्वत्थ का भाव = अश्वत्थत्व

दूरवा का भाव = दूरवत्व

चंपा का भाव = चम्पत्व

अमृत का भाव = अमृतत्व

मणि का भाव = मणित्व

प्रत्येक इकाई में इसका स्वत्व ~~स्वभावीन~~ है। सार्वभौम है।

पशुओं का भाव = पशुत्व

जीवों का भाव = (त्व) जीवत्व

पशु मनुष्य का भाव = पशुत्व

राक्षस मनुष्य का भाव = राक्षसत्व

देव मनुष्य का भाव = देवत्व

दिव्य मनुष्य का भाव = दिव्यत्व

• अस्तित्व में ही सम्पूर्ण भाव होने के कारण ~~अभाव~~ अस्तित्व ही परम भाव, परम धर्म, परम सत्य है

• अस्तित्व में ही विकास और जागृति नित्य प्रभावी है सम्पूर्ण भाव अस्तित्व ही है, सम्पूर्ण अभाव का ~~छ~~ भान आभास भी किसी भाव के अपेक्षा में ही है।

• अस्तित्व ~~स्वत्व~~ रहित भाव कल्पना भी नहीं होता है

• अस्तित्व में ही पदार्थ प्राण जीव ज्ञानावस्था में स्वयं सम्पूर्ण वास्तविकता प्रतिपादित और व्याख्यायित है। जो त्व के रूप में स्पष्ट है।

सम्पूर्ण भाव अस्तित्व में

सह अस्तित्व, देश दिशा काल रूप गुण स्वभाव धर्म स्थिति वर्तमान,

सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति = अस्तित्व में सह अस्तित्व।